03 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

देह के भान का भी त्याग होने का अनुभव

➢➢ अमृतवेला में रूहानी मिलन मनाना

➳ _ ➳ नई सुबह, नया दिन

→ आँख खुलते ही बाबा को अपने बेहद समीप पाती हूँ

→ बाबा बड़े प्यार से मुझे निहारते हुए मेरा माथा सहला रहे हैं

→ ले चलते हैं मुझे रूहानी सैर पर एक बगिया में

→ चारों ओर सुंदर फूलों से भरा उपवन

→ बाबा एक बहुत सुंदर पौधा दिखाते हैं, जड़ें मिट्टी में हैं

→ जड़े मिट्टी में हैं, पर उसके ऊपर मिट्टी से एकदम अलग पौधा

→ बाबा मुझ आत्मा को मिट्टी ओर उसके ऊपर झूमते पौधे को दिखा कर मुझे भी ऐसा ही करने को कह रहे हैं

■ मुझे अपनी देह रूपी मिट्टी से अलग होना है, तभी मेरी अवस्था भी उस पौधे समान झूमती हुई होगी

➳ _ ➳ स्थित होती हूं अपने निराकारी स्वरूप में

→ मैं आत्मा चमकता सितारा हूं, ज्योति का कण हूं

→ पांच तत्त्वों की इस देह से अलग हो देहभान से न्यारी होती जा रही हूं

→ देह से दूर देह की दुनिया से दूर महा ज्योति, सर्वशक्तिमान के साथ हूं

→ सर्वशक्तिमान से गुण और शक्तियों की किरणें निरन्तर मेरे ऊपर आ रही हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान बनती जा रही हूं

→ सर्व सम्बन्ध बाबा संग जोड़ बंधन मुक्त हो रही हूं

→ बाप से श्रेष्ठ मेरे लिए कोई नहीं है

■ मेरा मेरा सब समाप्त हो चला है

■ तन, मन, धन सब बाबा को समर्पित कर दिया है

■ इस पुरानी देह से विस्मृति हो गई है

➢➢ बुद्धि भी इस पुराने घर की ओर नही जाती

➳ _ ➳ कोई भी कर्मेन्द्रिय अपनी ओर आकर्षित नही करती

→ ये देह अमानत है बाबा की, मैं इसमे मेहमान हूं

→ केवल कर्म के लिए इसका आधार लिया है

→ न्यारेपन का अनोखा अनुभव कर रही हूं

→ मेहमान अर्थात महान आत्मा हूं

■ भरपूर आत्मा बनती जा रही हूं, सर्व खजानो से मालामाल आत्मा

■ रूहानियत धारण करती जा रही हूं, बाप समान बनती जा रही हूं

➳ _ ➳ बाप समान अर्थात समीप आत्मा हूं

→ जैसे बाप सदा सम्पन्न है, सर्वशक्तिमान है वैसे ही मैं भी हूं

→ डगमग नही अचल हूं, अडोल हूं, सर्व अलंकार धारी समर्थ आत्मा हूं तो हर बोल, हर कर्म चेक करके उसे करने वाली आत्मा

→ तो जो बाप के गुण, वो मेरे भी गुण जो बाप के कर्तव्य वो मेरे भी

→ बाप समान विश्व कल्याणकारी आत्मा हूं तो बेहद की सेवा अर्थात बाप से अन्य आत्माओं का मिलन मनाने में निम्मित आत्मा

→ ऐसी सेवा करा कर बाबा मुझे पद्मापद्मपति बनने का सौभाग्य दे रहे हैं

■ देहभान से दूर हो बाप की शक्ति और सहयोगी आत्मा बन गई हूं

■ सर्व भुजाधारी, क्यों क्या से दूर हर परिस्थिति में सहयोगी आत्मा बन गई हूं

■ स्वमान की सीट पर सेट हो नम्र चित्त ओर निर्मानचित आत्मा बन गई हूं